आपो हि ष्ठा मयोभुवः

सितम्बर 2011

संरक्षक
राजदेव सिंह

मुख्य संपादक
डॉ. भीष्म कुमार

परामर्शदाता
सी. पी. कुमार
डॉ. सुधीर कुमार
डॉ. एस. डी. खोब्रागड़े

संपादक
डॉ. रमा मेहता

सदस्य
ए. के. द्विवेदी
मु. फुरकान उल्लाह
प्रदीप कुमार उनियाल

संकलनकर्त्ता
पंकज गर्ग
पवन कुमार
कु. चारू मिश्रा

प्रकाशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की–247667
उत्तराखंड

मुद्रक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की के लिए राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर.) डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

जल चेतना

सम्पादकीय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की की तकनीकी पत्रिका "जल चेतना" का प्रथमांक सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है। संस्थान का प्रयास है कि वह इस पत्रिका के माध्यम से अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को जन–साधारण तक पहुंचाए जिससे समाज का हर वर्ग, चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, इन शोध कार्यों के परिणामों का लाभ उठा सके। अभी तक संस्थान सामान्य तौर पर जल एवं जलविज्ञान से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारियों को अग्रेजी भाषा के माध्यम से जन–साधारण तक पहुंचाता रहा है परंतु अब संस्थान द्वारा इस अनुकरणीय पहल के तहत इस वर्ष यह निर्णय लिया गया है कि इन महत्वपूर्ण जानकारियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाया जाए। यद्यपि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधाओं की जानकारी हिन्दी भाषा में जुटा पाना ही अपने आप में एक कठिन कार्य है लेकिन इसे संकलित कर जन–जन तक पहुंचाना और भी चुनौती भरा कार्य है। संस्थान ने प्रयास किया है कि इस अंक में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के विषयों की जानकारियों के साथ–साथ जल चेतना में ऐसे लेखों को भी सम्मिलित किया जाए जिनका जन–साधारण के जीवन से कोई न कोई सरोकार अवश्य हो। यह प्रयास किया गया है कि लेखों की भाषा सरल व सुबोध हो तथा हर वर्ग के पाठकों को यह उपयोगी तथा रोचक लगे। उम्मीद है कि कविता, समाचार तथा शिक्षा एवं रोजगार आदि विषयों के समावेश से पाठकों का भरपूर ज्ञानवर्धन होगा और वे इसके प्रति आकृष्ट होंगे।

प्रारंभ में यह पत्रिका अर्द्धवार्षिक होगी जिसे एक वर्ष बाद त्रैमासिक किये जाने का भरसक प्रयास किया जायेगा। इतना ही नहीं कालान्तर में "जल चेतना" का प्रकाशन मासिक स्तर पर किये जाने का भी विचार है । इस अंक में पानी की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से संबंधित लेखों को शामिल करने के साथ–साथ, भारत में मानसून की स्थिति, जल–भूजल : अनोखे गुण एवं भविष्य की चुनौतियां, पेयजल में फ्लोराइड की अधिकता से मानव शरीर पर कुप्रभाव एवं वाटर प्योरिफायर्स इत्यादि जैसे रोचक एवं जनोपयोगी लेखों का समावेश किया गया है। पानी से संबंधित तकनीकी जानकारी के अतिरिक्त कुछ अन्य रोचक विषयों जैसे कि जलविज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा एवं रोजगार के अवसर, विचित्र किन्तु सत्य, इत्यादि पर भी लेख शामिल किये गये हैं ।

विगत एक दशक से देश में जल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसका प्रमुख कारण जन–साधारण को जल संबंधी पर्याप्त जानकारी का न होना है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से जल से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारियों को जन–सामान्य तक पहुँचाना ही हमारा परम उद्देश्य है ताकि आने वाले समय में पानी के दुरूपयोग को कम किया जा सके तथा पानी की निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता पर रोक लगाई जा सके। यद्यपि पत्रिका का मूल्य 25 रूपये रखा गया है तथापि प्रवेशांक होने के कारण प्रचार–प्रसार की दृष्टि से यह अंक निशुल्क वितरित किया जायेगा।

सम्पादक मंडल उन समस्त विद्वत लेखकों का आभारी है जिन्होंने इस पत्रिका के प्रवेशांक के लिए अपने रोचक एवं उपयोगी लेख देकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। जल चेतना के इस अंक में जिन स्रोतों से चित्रों का संकलन किया गया है संपादक मंडल उन सभी के लिए हार्दिक रूप से आभार प्रकट करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमें राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर) नई दिल्ली के श्री कौशल किशोर (प्रोडक्शन आफिसर), श्री प्रदीप शर्मा (वैज्ञानिक 'एफ'), डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा "अरूण" (पूर्व प्रधानाचार्य) बी. एस. एम. डिग्री कॉलेज, रूड़की तथा बी.एच.ई.एल., हरिद्वार के डॉ. नरेश मोहन (राजभाषा समन्वयकर्त्ता अधिकारी) का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिये हम हृदय से इन सबका आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को बेहद रोचक तथा उपयोगी लगेगी । पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक तथा सुन्दर बनाने तथा सामग्री एवं साज–सज्जा में सुधार लाने के उद्देश्य से सुधी पाठकों की प्रतिकियाएं अपेक्षित हैं।

मूल्य : 25.00 रूपये
शिकायत : 01332–249228, 249201
ई–मेल : rama@nih.ernet.in

सम्पादकीय : 249228, 249257, 249267,
फैक्स : 01332–272123
ई–मेल : rama@nih.ernet.in
uniyalpk@gmail.com
pawan@nih.ernet.in
वेब साइट : www.@nih.ernet.in

© राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, उत्तराखंड
पत्रिका में प्रकाशित आलेख एवं रचनाओं में प्रस्तुत तथ्य लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद रूड़की न्यायालय द्वारा ही निपटाए जायेंगे।